प्रातः क्लास 14-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

****

ओमशान्ति। मीठे2 बच्चों को समझाया गया है यह है मृत्युलोक। इस के भेट में अमरलोक भी है। भक्ति-मार्ग में गाया हुआ है पार्वती को अमरकथा सुनाई थी। अभी अमरलोक में तो तुम जाते हो। शंकर तो कथा सुनाते नहीं। कथा सुनाने वाला ज्ञान सागर एक ही बाप है। शंकर कोई ज्ञान सागर नहीं जो कथा सुनावेंगे। और कथा एक को तो नहीं सुनानी होती है। ऐसे टापिक्स पर तुम बच्चों को समझाना चाहिए। काल पर कैसे जीत पहनी जाती है। यह जो नालेज है अमर भी बनाती है, इससे आयु भी बड़ी होती है। वहां काल होता ही नहीं। यहां तुम 5 विकारों अथवा रावण पर जीत पाने से रामराज्य अथवा अमरलोक के मालिक बनते हो। मृत्युलोक है रावणराज्य। अमरलोक में है रामराज्य। देवताओं को काल नहीं खाता। वहां काल के जमघट होते नहीं। यह तो टापिक्स भी कोई कम नहीं है। मनुष्य काल पर विजय कैसे पहन सकते हैं। है तो गीता अथवा ज्ञान की बात। भारत अमरलोक था। कितनी बड़ी आयु थी। सर्प का मिशाल भी सतयुग के लिए है। एक खल छोड़ दूसरा ले लेते हैं। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। जानते हैं यह सारी सृष्टि तो विनाश होने की है। यह पुराना शरीर भी छोड़ना है। यह 84 जन्मों का पुराना खल है। अमरलोक में तो ऐसे नहीं होता। वहां फिर सर्प्स अभी शरीर बड़ा हुआ सतोप्रधान से तमोप्रधान हो गया, फिर सा० होता है। सर्प को भी नये खल का सा० होता होगा ना। समझ को सा० कहा जाता है। हमारा अभी नया खल तैयार हुआ है। पुराना को छोड़ना है। वहां भी ऐसे होता है। उनको कहा ही जाता है अमरलोक जहां काल नहीं खाता। आपे ही समय पर शरीर छोड़ देते हैं। कच्छूओं का भी मिशाल यहां का ही है। कर्म कर के फिर अन्तर्मुख हो जाना है। इस समय के मिशालों को भी भक्ति मार्ग में कापी करते हैं। परन्तु सिर्फ कहने मात्र। समझते कुछ भी नहीं है। अभी तुम तो समझते हो। खड़ी उत्सव, दशहरा, दीपमाला, होली आद सभी इस समय के हैं फिर जो भक्ति मार्ग में चली आती है। यह बातें सतयुग में होती नहीं। तो यह भी टापिक अच्छी है। मनुष्य काल पर जीत कैसे पहन सकते हैं। मृत्युलोक से अमरलोक कैसे जा सकते हैं। ऐसी2 बातें समझाने के लिए लिखना चाहिए। जैसे नाटक के लिए लिखते हैं ना। आज फलाना नाटक है। तुम्हारी भी पायन्टस सेन्टर पर नोट रखनी चाहिए। पायन्टस की लिस्ट हो। आज इस पायन्ट पर समझाया जावेगा। रावण राज्य से दैवी रामराज्य में कैसे जा सकते हैं। यह भी टापिक। समझानी तो भल एक ही है। परन्तु टापिक सुनने से खुश होंगे कि जाकर सुनें। बेहद के बाप से बेहद के विश्व के मालिक बनने का वर्सा कैसे मिलता है आकर समझो। जैसे सन्यासियों का भी अखबार में पड़ता है ना आज 125वां यज्ञ रचा। उसमें आज यह सुनावेंगा। यहां तो वह बात नहीं। बाप कहते हैं मैं तो एकही बार यह यज्ञ रचता हूं। कोई 50-60 यज्ञ तो नहीं रची है। एक ही यज्ञ रचता हूं जिसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा हो जाती है। वह तो बहुत ही यज्ञ रचते हैं। जलसा आद करते हैं। यहां तो तुम जानते हो इस सारी पुरानी सृष्टि स्वहा हो जानी है। यह रुद्र बाबा का ज्ञान यज्ञ है। जिस यज्ञ से तुम ऐसा देवता बनते हो। नई दुनिया स्थापन हो जाता है। यह है मनुष्यों की पुरानी दुनिया। नई दुनिया में सिर्फ इन देवी देवताओं का ही राज्य होता है। यह भी बाप ही तुमको समझाते हैं। रचयिता बाप अपना और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान देते हैं। राजयोग सिखाते हैं। सतयुग में है ही पवित्र देवी देवतायें, राज्य भी करते हैं। इसको कहा जाता है आदी सनातन देवी देवता धर्म। यह भी टापिक रख सकते हो। आदी सनातन सतयुगी देवी देवता धर्म की स्थापना कैसे हो रही है आकर समझो। विश्व में शांति कैसे स्थापन होती है आकर समझो। परमपिता परमात्मा के सिवाय विश्व में शान्ति स्थापन करने की राय कोई दे न सके। राय देने वाले को मिडल्स प्राईज मिलती है। विश्व में शान्ति स्थापन करने का प्राईज कैसे और कौन देते हैं यह भी टापिक ऐसे विचार सागर मंथन कर निकालनी चाहिए। ऐसा प्रबन्ध रचो जो सभी जगह एक ही टापिक हो तो सभी का कनेक्शन कनेक्शन रहेगा। ऐसी लिस्ट बनाकर पहले से ही इशारा दे देना चाहिए। फिर वह समाचार देहली में आना चाहिए तो सभीको मालूम पड़ जावे

कि सभी जगह ऐसा भाषण चला। इनको ही युनिटी कहेंगे। सारी दुनिया में है डिस-युनिटी। राम-राज्य का तो गायन है ना। शेर और बकरीइकट्ठे जल पीते थे। त्रेता में ही ऐसा है तो सतयुग में क्या न होगा। बाकी शास्त्रों में तो अनेक कथाएं लिखदी है। भक्ति मार्ग में है ही कथाएं। तुम तो बाप से एक ही कथा सुनते हो। दुनिया में तो मनुष्य ढेर के ढेर कथाएं सुनाते रहते है। द्वापरसेलेकर जो भी शास्त्र आद चलती हैवहां तो वह होती ही नहीं। भक्ति मार्ग के सभी बातें पूरी हो ती है। वहां सह कुछ भी नहीं होता। बाप कहते हैं अभी वह सभी बातें छोड़ दो। भक्ति-मार्ग अभीपूरा हुआ। उनका नाम भी न लो। हियर नो ईविल, टाक नो ईविल। कोई को देखने की भी दरकार नहीं। जो कुछ देखते हैंसभी है ईविल। रावण राज्य में सभी बन्दर ही बन्दर हैं। उनको देखते हुये, सुनते हुये न सुना न देखो। अभी बाप जो समझाते हैंवही बुधि में है। हम संगम युगी ब्राहमण हैं।xx कितने ऊंच हैं। इस समय हम ईश्वरीय औलाद हैं। देवताओं से भी ऊंच हैं। धीरे2 बुधि को पाते रहेंगे। इतनी सहज बाप भी जिसकी बुधि में नहीं आती। हम ईश्वरीय औलाद तो स्वर्ग के मालिक जरूर होनी चाहिए। क्योंकि वह बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तो हम स्वर्ग में क्यों नहीं हैं। करोड़ों वर्ष कह देने के कारण कोई बात याद भी नहीं रहती। बाप आकर याद दिलाते हैं। यह तो 5000वर्ष की बात है। तुम देवी देवताएं थे। अभी फिर तुमको वही बनाते हैं। सम्मुख सुनने से कितनी खुशी, रिफ्रेशमेन्ट आ जाती है। भक्ति मार्ग में तो बहुत झूठे गप्पोड़े सुनाते हैं। है सभी झूठ। गायन भी है झूठी माया... 5तत्व भी झूठी है। सभी सांवरे तमोप्रधान बन गये हैं। बच्चे जो सयाने समझदार हैं उनकी बुधि में आता है। बाप से वर्सा तो जरूर मिलता है। बाबा नईदुनिया रचते हैं तो तो हम जरूर उस दुनिया में होने चाहिए। बाप के तो सभी बच्चे हैं। सभी का धर्म, रहने का स्थान, आना-जाना भिन्न2 प्रकार से है। कैसे जाकर मूलवतनमें निवास करते हैं वह सब बुधि में है। मूल वतन में सिजरा है। सूक्ष्मवतन में तो सिजरा नहीं दिखा सकते। वहां जो कुछ खाते हैं वह सभी हैं।० की बातें। यह भी ड्रामा में नूंध है। तुम सूक्ष्मवतन में रहते हो। वहां मूवी चलता है। बीच में मूवी का भी ड्रामाबना था। फिर टाकी बना है। सायलेन्स का तो ड्रामा बन न सके। बच्चे जानते हैं हम सायलेन्स में कैसे रहते हैं। जैसे वहां आत्माओं का सिजरा है वैसे यहां मनुष्यों का भी है। यह तो ऐसी2 पायन्ट बुधि में रख तुम समझा सकते हो। फिर भी पढ़ाई में कितना टाईम लगता है। कर के यह भी समझ जाये परन्तु याद की यात्रा कहां से धारण हो और खुशी हो। तुम अभी यर्थात रीति योग सीख रहे हो। बच्चों को समझाया है xx भाई 2 देखो। आत्मा का तख्त तो यह है। इसलिए भागीरथ बाप का सिंघसन भी मशहुर है। जब किसकोसमझाते हो तो ऐसे ही समझो हम भाईयों को समझाते हैं। दृष्टि ऐसी रहे। इसमें ही बड़ी भारी मेहनत है। मेहनतसे ही ऊंच पद मिलता है। बाप भीऐसे ही देखेंगे। बाप की नज़र भृकुटि के बीच में ही जावेगी। आत्मा तो छोटी बिन्दी है। सुनती भी वह है। तुम बाप को भी भृ कुटि के बीच में ही देखेंगे। बाबा भी यहां है तो भाई(साकार की आत्मा)भी यहां है। इस भाई का रथ बाप ने लिया है। ऐसे बुधि रहने से तुम भी जैसे ज्ञान सागर के बच्चे ज्ञान सागर बन जाते हो। तुम्हारे लिए तो सहज है। गृहस्थ व्यवहार में रहने वालों लिए यह अवस्था जरूर.... सुन कर घर चलेजाते हैं वहां का वातावरण ही और होता है। है भी सहज युक्ति बहुत ही सहज बतलाते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को यादकरो। यह भी भाई है। इस दृष्टि से देखोतो नाम रूप है नहीं। फिर सभी बातों से हट जावेंगे। कर्मx बन्धनों से अतित हो जावेंगे। शरीर भी भूल जाता है। सिर्फ बाप ही याद रहता है। इसमें मेहनत करते रहेंगे तब ही पास विथ ओनर होंगे। इसमें ही बहुत मेहनत है। भाई2 पक्का समझाना है। ऐसी अवस्था में बिरले कोईरहते हैं। विश्व के मालिक भी तो वही बनते हैं। आठ रत्नों की माला है ना। तो पुरूषार्थ करना है। ऊंच पद पाने वाले कैसे भी कर के पुरूषार्थ जरूर करते होंगे। इस में दूसरी कुछ भी बातें निकलती नहीं। भाई2 का स्नेह, सम्बन्ध हो जाता है। दृष्टि वैसे जम जाती है।

इसमें बहुत मेहनत है। इसलिए बाबा कहते हैं बहुत गुह्य बातें सुनाता हूं। इसमें अभ्यास करना मेहनत का काम है। यहां तुम बैठते हो तो भी भाईयों को देखो। आत्मा ही सुनती है। सुनने वाले को तुम देखते हो। मनुष्य तो कह देते आत्मा निर्लेप है। बाकी क्या शरीर सुनता है क्या। यह तो रंग हो गया। यह है गुह्य2 बड़ी डिफिकल्ट बातें। पुरुषार्थ कर के देखो प्रे×ख्×ख्× ऐसे हैं ना। मेहनत तो करनी ही है। जो कल्प पहले बने थे वह मेहनत जरूर करेंगे। अपना अनुभव भी सुनावेंगे। ऐसे हम सुनता सुनाता हूं। टेव पड़ गई है। आत्मा बिगर शरीर को बुद्धि में लाता नहीं हूं। आत्मा आत्मा को सुनाती है मन्मनाभव। वह उनको वह उनको कहते हैं मन्मनाभव। अर्थात बाप को याद करो। यह है गुप्त बात। जैसे पढ़ाई में झाड़ के नीचे जाकर बैठ पढ़ते हैं ना। वह तो स्थूल बात हो गई। यह प्रेक्टीस डालनी है एकान्त में अपने को आत्मा निश्चय कर बैठना। देखो देह अभिमान आता है फिर प्रेक्टीस करो। दिन प्रति दिन तुम्हारी प्रेक्टीस बढ़ती जावेगी। नई2 बातें तुम सुनते हो। जो तुम अभी सुनते हो। फिर नये2 भी आकर नई2 बातें सुनेंगे। कोई कहे हम देरी से आये हैं। और तुम तो और ही फर्स्ट क्लास गुह्य2 बातें सुनते हो। जो पुरुषार्थ करने से ही ऊंच पद मिलता है। और ही अच्छा है। माया तो पिछाड़ी तक छोड़ती नहीं। माया की लड़ाई चलती रहेगी। जब तक तुम जीत पहनो। फिर अनायास ही तुम चले जावेंगे। जो जितना याद करेंगे समझेंगे हम जाते हैं। बाप के पास। शरीर छोड़ते हैं। बाबा ने देखा है ऐसे ब्रह्म में लीन होने वाले कोई2 जाते हैं। फिर सन्नाटा हो जाता है। बाबा का देखा हुआ है। ऐसे2 पुरुषार्थी भी होती हैं। काशी करवट भी बहुतों ने खाया। भक्ति मार्ग में जो जिस भावना में रहती है ऐसा पुरुषार्थ करते रहते हैं। बाकी मोक्ष को को तो कोई पाता नहीं। न वापस ही जाते हैं। ताकि यह सभी स्वर्ग चाहिए ना। सभी आ जावेंगे। एक भी न रहेंगे। (एक गोप को सी आफ करने कोई जाते थे) विनाश के समय कोई सी आफ थोड़े ही करेंगे। सभी जाने वाले हैं। वापस जाना ही है। जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी चले जावेंगे। बाकी थोड़े ही बचेंगे वह कहेंगे हम सभी को सी आफ किया। इस समय तुम बच्चे जानते हो सतयुग की स्थापना हो रही है। कितने करोड़ मनुष्य हैं। सभी को हम सीआफ कर के अपनी राजधानी में चले जावेंगे। यह लोग तो कर के 40-50 को सीआफ करते होंगे तुम कितने को सी आफ करेंगे। सभी आत्मायें मच्छड़ों सदृश्य चली जावेंगी। तुम आये हो साथ ले जाने अप्रे× भेजने लिए। तुम्हारी बात ही वन्डर फुल है। इतने करोड़े मनुष्य जावेंगे उनको हम सी आफ करेंगे। सभी वापस मुलवतन चले जावेंगे। यह भी तुम्हारी ही=बुद्धि काम करती है। आस्ते2 सिजरा पूरा हो जावेगा। फिर रुण्ड माला रुद्र माला बन जावेगी। यह बातें तुम्हारे बुद्धि में ही है। रुद्र मालासो रुण्ड माला कैसे बनती है कितनी नालेज है। तुम्हारे में भी जो शुद्ध बुद्धि हैं वह ही समझ सकते हैं। यह बुद्धि में याद रखने की बातें हैं। अनेक प्रकार से बाप समझाते है याद करने लिए। हम रुद्र माला में जाकर फिर रुण्ड माला में जावेंगे। फिर नम्बरवार आते रहेंगे। कितनी बड़ी रुद्र माला बनती है।

इस ज्ञान को कोई भी नहीं जानते हैं। शुरू से लेकर अन्त तक इस ज्ञान को नहीं जानते हैं। संगमयुगी ब्राह्मण ही जानते हैं। इस पुरुषोत्तम संगम युग को याद करो। तो सारी नालेज बुद्धि में आ जावेगी। तुम हो जैसे लाइट हाउस। सभी को दिखाने लगाने वाले। तुम कैसे लाईट हाउस बनते हो। ऐसी कोई बात नहीं जो तुम से लागू नहीं होती है। तुम सर्जन भी हो। तुम सर्जन भी हो, सराफ भी हो। धोबी भी हो। सभी खासियतें तुम्हारे में आ जाते हैं। महिमा भी तुम्हारी हो जाती है परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जैसे कर्तव्य करते हो ऐसा गायन होता है। बाप तो डायरेक्शन देते हैं। उस पर विचार करना सेमीनार करना तुम बच्चों का काम है। बाबा कोई मना नहीं करते हैं। अच्छा बहुत सुनाने से क्या फायदा। बाप कहते हैं मन्मनाभव दिन प्रति दिन कम हो जाता जावेगा। अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।